सं. ब्रो.वि./एफ.डी./105-85/36916.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. नानक ड़ेरी प्लांट, जी ब्हीड रोड, होडल (फरीदाबाद), के श्रमिक श्री शोभा राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविन्यम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पड़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जो-अम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958, द्वारा उनत ग्राधिसूचना के धारा 7 के ग्रधीन गठित अम न्यायालय, फ़रीदाबाद, को विवादग्रस्त पा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित चीचे लिखा मामला न्यायिन गर्य पंचाट तीन मास में देने हेनु निर्दिण्ड करने हैं जो कि उनत प्रजन्मकों तथा असिक के बीच या तो विवादग्रस्त मीमला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री शोभा राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो.बि./एफ़.डी./155-84/36982--ेचूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैं. केयर प्रा. लि., 13/7, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मुन्दर देव प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीद्यो-णिक विवाद है;

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, स्रव, सौद्योगिक विवाद स्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी स्रधिसूचना सं 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए स्रधिसूचना सं 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त स्रधिसूचना की धारा 7 के स्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत स्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री सुन्दर देव प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./150-85/36989.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग है कि मैं. ग्लोब इण्डस्ट्रीज, पंजाबी कालौनी, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री कल्लु राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसुचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री कल्लु राम की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहंत का हकदार है ? दिनांक 11 सितम्बर, 1985

सं० ग्रो०वि०/ग्रम्बाला/113-85/37426.—चूंकि हरियाणा के राज्यपात की राय है कि मैं० वराड़ा कोग्रोप्रेटिव मार्किटिंग कम प्रोतीसँग सो गय्टी ति० वराड़ा (ग्रम्बाला) के श्रीमक श्री सुदेश कुमार तथा उत्तके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, अौबोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अबीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तोन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुदेश कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?